मैं बोहोत हांसी देखी आप पर, अनगिनती हक इस्क।
इलम धनी के देखाइया, मैं दोऊ देखे बेसक।। ४३ ।।

मैंने अपने ऊपर ही बेशुमार हंसी को देखा। श्री राजजी महाराज के बेशुमार इश्क को देखा। यह दोनों की पहचान श्री राजजी महाराज की जागृत बुद्धि ने कराई।

मोको धनिएं देखाइया, सब इस्क चौदे तबक।
इत जरा न बिना इस्क, अपना ऐसा देखाया हक।। ४४ ।।

मुझे श्री राजजी महाराज ने इन चौदह तबक में ऐसा इश्क दिखाया कि सब जगह श्री राजजी महाराज के इश्क के बिना और कुछ दिखाई ही नहीं देता।

जो जागो सो देखियो, मेरी तो निसां भई।
रूह देखे सो दिल लग न आवहीं, तो क्यों सके जुबां कही।। ४५ ।।

मेरी तो तसल्ली हो गई है। अब जो जागृत हो जाए वह स्वयं देख ले। रूह जिसे देख लेती है वह दिल में नहीं आता तो जबान से कैसे कहा जाए?

ए तो केहेती हों खेल का, और कहा कहूं अर्स की इत।
अर्स का इस्क तो कहों, जो ठौर जरे की पाऊं कित।। ४६ ।।

यह तो मैंने खेल की बात बताई है। अब परमधाम की हकीकत यहां कैसे कहूं? अर्श के इश्क का बयान तब करूं जो कहीं थोड़ा सा ठिकाना मिले।

मोमिन होए सो समझियो, ए बीतक कहे महामत।
अब बात न रही बोलन की, कह्या चलते जान निसबत।। ४७ ।।

श्री महामतिजी मोमिनों को कहते हैं कि यह मेरी बीती बात है जो भी परमधाम की रूह हो वह समझ लेना कि अब इससे अधिक कहने की कोई बात बाकी नहीं रही है। यह तो मैंने तुमको अपना सम्बन्धी जानकर थोड़ा सा बताया है।

।। प्रकरण ।। १२ ।। चौपाई ।। ९८९ ।।

सागर छठा खुदाई इलम का

सागर छठा है अति बड़ा, जो खुदाई इलम।
जरा सक इनमें नहीं, जिनमें हक हुकम।। १ ।।

रंग महल की उत्तर की दिशा में मधु सागर है जो खुदाई इलम का सागर है, इसमें कोई संशय बाकी नहीं है। इसमें श्री राजजी महाराज का हुकम है, अर्थात् छठा सागर हुकम का स्वरूप है।

जेता तले हुकम के, ए जो कादर की कुदरत।
ए सब बेसक तोलिया, सक न पाइए कित।। २ ।।

अक्षर ब्रह्म की योगमाया श्री राजजी महाराज के हुकम के तले है। हुकम के अनुसार काम करती है। यह मैंने अच्छी तरह देखा है। हक इलम से सब संशय मिट गए।

Nijanand App

आसमान जिमी के बीच में, बेसक हुता न कोए।
जब लग सक दुनियां मिने, तो कायम क्यों कर होए।। ३ ।।

आसमान-जमीन के बीच में तथा चौदह लोक के ब्रह्माण्ड में किसी को भी पारब्रह्म के नाम, ठाम, लीला और स्वरूप का ज्ञान नहीं था। जब संसार के संशय नहीं मिटेंगे, तो अखण्ड कैसे होगा?

अव्वल से आखिर लग, इत जरा न कहूं सक।
रूहअल्ला के इलम से, हुए कायम चौदे तबक।। ४ ।।

रूह अल्लाह श्यामा महारानी के तारतम ज्ञान से सभी के संशय मिट गए। आदि नारायण से आज तक जो संसार भ्रम में पड़ा था, अब सबके संशय मिट गए। अब चौदह लोक अखण्ड हो जाएंगे।

इस्क काहूं ना हुता, तो नाम आसिक कह्या हक।
सो बल इन कुंजीय के, पाया इस्क चौदे तबक।। ५ ।।

चौदह लोक के ब्रह्माण्ड में पारब्रह्म के इश्क की सुध किसी को न थी, इसलिए श्री राजजी महाराज ने आशिक बनकर अपने जागृत बुद्धि के ज्ञान (तारतम वाणी) से इस संसार को पहचान कराई। अब सब पारब्रह्म के इश्क को लेकर बहिश्तों में कायम होंगे।

ए दुनियां पैदा किन करी, हुती न काहूं खबर।
सो सक मेटी सबन की, इलम खुदाई आखिर।। ६ ।।

इस दुनियां वालों को तो यह भी खबर नहीं थी कि दुनियां किसने पैदा की है? सभी अपनी-अपनी अटकल से खोज-खोजकर थक गए। अब जागृत बुद्धि (परा शक्ति) के ज्ञान से सबके संशय मिट गए।

वेद और कतेब में, कहूं सुध न हुती मुतलक।
खोल हकीकत मारफत, किन काढ़ी न सुभे सक।। ७ ।।

वेद और कतेब के ज्ञान से भी किसी को पारब्रह्म की सुध बिल्कुल नहीं मिली। हकीकत और मारफत के ज्ञान के बिना किसी के संशय मिटे नहीं।

बड़े सात निसान आखिर के, जासों पाइए कयामत।
खिताब हादी जाहेर कर, दई सबों को नसीहत।। ८ ।।

कयामत के बड़े निशान जो कुरान ने बताए हैं, जो कोई खोल नहीं सका। उनको खोलने का खिताब इमाम मेंहेदी श्री प्राणनाथजी को था, जिन्होंने अब सब छिपे भेदों को जाहिर कर सबको समझा दिया है।

आजूज माजूज लेसी सबों, ऊगे सूरज मगरब।
ईसा मारे दज्जाल को, एक दीन करसी सब।। ९ ।।

आजूज-माजूज सारी दुनियां को खा जाएंगे और सूर्य पच्छिम से उदय होगा, ईसा रूह अल्लाह (श्यामा महारानी) दज्जाल को मारकर एक पारब्रह्म की पूजा कराएंगे।

दाभा होसी जाहेर, मेंहेंदी मोमिनों इमामत।
उड़ावे सूर असराफील, बेसक पाया बखत।। १० ।।

दाभतूल जानवर पैदा होगा और इमाम मेंहेंदी साहेब अपने मोमिनों के साथ जाहिर होंगे। दुनियां का न्यायाधीश बनकर सबका हिसाब लेकर आठ बहिश्तों में कायम करेंगे। कायमी के वक्त असराफील फरिश्ता ज्ञान का बिगुल बजाएगा।

Nijanand App

काफर और मुनाफक, हंसते थे महंमद पर।
सोई दिन अब आए मिल्या, जो महंमदें कही थी आखिर।। ११ ।।

रसूल साहब की भविष्यवाणी पर काफिर और दोगले लोग हंसा करते थे। मुहम्मद साहब के कहे अनुसार अब आखिरत का समय आ गया है।

बसरी मलकी और हकी, कही महंमद तीन सूरत।
करें सिफायत आखिर, खासल खास उमत।। १२ ।।

बसरी, मलकी, हकी मुहम्मद साहब की तीनों सूरतें जो कुरान में कही थीं, अब श्री प्राणनाथजी के अन्दर आ गई हैं। अब ब्रह्मसृष्टियां दुनियां को कायम करने की सिफारिश करेंगी।

नोट—कयामत के सारे निशानों का विवरण खुलासा ग्रंथ में हो चुका है और मारफत सागर में भी दुबारा किया गया है कृपया वहां देखें।

करम-कांड और सरीयत, किन किन लई तरीकत।
दुनियां चौदे तबक में, किन खोली ना हकीकत।। १३ ।।

चौदह तबक की दुनियां में सभी कर्मकाण्ड और शरीयत के रास्ते पर चलते थे। उनमें किसी-किसी ने उपासना (तरीकत) का ज्ञान पाया, परन्तु हकीकत के भेद किसी ने नहीं खोले।

नासूत मलकूत लाए की, ना सुध थी जबरूत।
नाम पढ़े जानत हैं, कहें बका लाहूत।। १४ ।।

मृत्युलोक और बैकुण्ठ, अर्थात् चौदह लोक के मिटने वाले ब्रह्माण्ड को अक्षर ब्रह्म की सुध नहीं थी। यहां के पढ़े-लिखे लोग अखण्ड परमधाम को लाहूत कहते तो हैं, परन्तु सुध नहीं है।

ए सुध न पाई काहूं ने, क्यों है कहां ठौर विध किन।
खोज खोज चौदे तबक का, दिल हुआ न किन रोसन।। १५ ।।

लाहूत (अखण्ड परमधाम) कहां है, कैसा है, इसकी सुध किसी को नहीं मिली। चौदह लोक के लोगों ने खोजा, परन्तु पहचान किसी को नहीं हुई।

सो इलम खुदाई लदुन्नी, पोहोंच्या चौदे तबक।
सो इतथें मेहेर पसरी, सबे हुए बेसक।। १६ ।।

अब वह खुदाई इलम (जागृत बुद्धि का ज्ञान) चौदह लोक में पहुंच गया है। अब श्री राजजी महाराज की मेहर से इमाम मेंहेंदी श्री प्राणनाथजी जागृत बुद्धि की तारतम वाणी देकर सबके संशय मिटाएंगे।

अव्वल कह्या फुरमान में, इत काजी होसी हक।
करसी कायम सबन को, ऐसी मेहेर होसी मुतलक।। १७ ।।

कुरान में पहले ही कहा है कि पारब्रह्म न्यायाधीश बनकर आएंगे और सारे संसार का हिसाब लेकर निश्चित ही अपनी मेहर से अखण्ड करेंगे।

ए खेल किया किन वास्ते, और हुआ किनके हुकम।
ए सुध काहूं ना परी, कहां अर्स बका खसम।। १८ ।।

यह खेल किसके वास्ते किसके हुकम से बना है? अखण्ड परमधाम और पारब्रह्म अक्षरातीत धाम के धनी कहां हैं? इसकी सुध किसी को नहीं मिली।

Nijanand App

गिरो रूहें फरिस्ते लैल में, किन वास्ते आए उतर।
कुंन केहेते खेल पैदा किया, ए किनने किन खातिर।। १९ ।।

ब्रह्मसृष्टि और ईश्वरीसृष्टि खेल में किस कारण से उतरी हैं? किसने किसके वास्ते कुंन कहकर दुनियां को पैदा किया? यह खबर किसी को नहीं थी।

किन कौल किया बीच अर्स के, अरवाहें जो मोमिन।
सो पढ़े वेद कतेब को, ए खोली ना हकीकत किन।। २० ।।

रूह मोमिनों से परमधाम में आखिरत के समय आने का वायदा किसने किया था? वेद और कतेब के पढ़ने वालों में किसी ने भी इस हकीकत को नहीं जाना।

ए इलमें सब विध समझे, सांचा इलम जो हक।
सब मर मर जाते हुते, किए इलमें बका मुतलक।। २१ ।।

अब पारब्रह्म की जागृत बुद्धि की तारतम वाणी से यह हकीकत सबको समझ आ गई। चौदह लोक के जीव जो जन्म-मरण के चक्कर में पड़े थे, इस जागृत बुद्धि के तारतम वाणी से अखण्ड हो गए।

क्यों सदर-तुल-मुन्तहा, क्यों है अर्स अजीम।
क्यों कौल फैल हकके, क्यों हक सूरत हलीम।। २२ ।।

अक्षरधाम और परमधाम, क्यों, कैसा, और कहां है? पारब्रह्म का स्वरूप कैसा है? उनकी लीला कैसी है? यह सुध किसी को नहीं थी।

क्यों अर्स आगूं जोए है, क्यों अर्स ढ़िग है ताल।
क्यों पसु पंखी अर्स के, क्यों बाग लाल गुलाल।। २३ ।।

रंग महल के आगे जमुनाजी कैसी बहती है? रंग महल के पास हौज कौसर ताल कैसा है? पशु-पक्षी परमधाम के कैसे हैं? कैसे वहां के बगीचे सुन्दर फूल से लाल गुलाल हैं?

क्यों खासल खास उमत, बीच नूरतजल्ला जे।
क्यों खास उमत दूसरी, जो कही बीच नूर के।। २४ ।।

परमधाम में खासल खास रूहें कैसी हैं? दूसरी ईश्वरीसृष्टि जिनको अक्षर की सुरता कहा गया है, कैसी हैं?

ए नाम निसान सब लिखे, खुसबोए जिमी उज्जल।
और कह्या पानी दूध सा, ताल जोए का जल।। २५ ।।

परमधाम के सभी नाम, निशान कुरान में लिखे है, जिसमें रसूल साहब ने बताया है कि परमधाम की जमीन निर्मल और खुशबूदार है। उन्होंने और भी बताया है कि जमुनाजी और हौज कौसर ताल का जल दूध के समान मिश्री जैसा मीठा है।

जोए किनारे जरी दयोहरी, पूर जवेर दरखत।
ए नाम निसान सबे लिखे, पर कोई पावे ना हकीकत।। २६ ।।

कुरान में रसूल साहब ने लिखा है कि जमुनाजी के किनारे जवेरों से जड़े हैं और किनारे पर दयोहरियां बनी हैं और पाल के ऊपर जवेरों के वृक्ष शोभायमान हैं। यह सब निशान कुरान में लिखे तो हैं, परन्तु इस हकीकत को कोई जानता नहीं।

Nijanand App

नेक नेक निसान केहेत हों, वास्ते साहेदी महंमद।
ए पट खुल्या नूर पार का, कहों कहां लग कहूं न हद।। २७ ।।

रसूल साहब ने जो कुरान में कहा था वह सत्य है। इस वास्ते मैं थोड़ा-थोड़ा उन निशानों की हकीकत को जाहिर करती हूं। अब अक्षर के पार परमधाम का ज्ञान प्राप्त हो गया है जो बेशुमार है। कहां तक उसे कहें?

इलम खुदाई लदुन्नी, रूह अल्ला ल्याए इत।
उमियों पट खोल बका मिने, बैठाए कर निसबत।। २८ ।।

श्री राजजी महाराज की जागृत बुद्धि का ज्ञान श्यामा महारानी लेकर आई हैं। जिसके द्वारा उमियों (मोमिनों) को अखण्ड घर की पहचान कराकर अपनी अंगना जानकर परमधाम में जगा दिया।

ए बल इन कुंजीय का, काहूं हुता न एते दिन।
रूहअल्ला पैगाम उमत को, द्वार खोल्या बका वतन।। २९ ।।

जागृत बुद्धि की तारतम वाणी का बल आज दिन तक कोई जानता नहीं था। अब श्यामा महारानी के पैगाम तारतम वाणी से ब्रह्मसृष्टियों को अखण्ड घर की पहचान हो गई है।

ए कायम अर्स अपार है, जो कहावत है वाहेदत।
कोई पोहोंचे न अर्स रूहों बिना, जिनकी ए निसबत।। ३० ।।

अखण्ड परमधाम की शोभा बेशुमार है और यहां पर सब एकदिली है। रूह मोमिन जो श्री राजजी महाराज की अंगना हैं, उनके सिवाए यहां कोई नहीं आ सकता।

ए बल देखो कुंजीय का, जिन बेवरा किया बेसक।
ए भी बेवरा देखाइया, जो गैब खिलवत का इस्क।। ३१ ।।

इस जागृत बुद्धि की तारतम वाणी ने सब संसार के संशय मिटाकर श्री राजजी महाराज के छिपे खिलवतखाना के इश्क की बातें बता दीं।

ए बल देखो कुंजी का, जिन देखाई निसबत।
ए जो रूहें जात हक की, जिन बेसक देखी वाहेदत।। ३२ ।।

जागृत बुद्धि की तारतम वाणी के बल को देखो। जिसने मोमिनों को उन श्री राजजी महाराज की अंगना होने की पहचान करा दी। अब मोमिन ने अपनी परआत्मा और मूल-मिलावा की एकदिली को पहचान लिया।

ए बल देखो कुंजीय का, खूब देखी हक सूरत।
हक के दिल के भेद जो, सो इलमें देखी मारफत।। ३३ ।।

जागृत बुद्धि की तारतम वाणी से श्री राजजी महाराज के स्वरूप की पहचान हुई और उनके दिल के छिपे भेदों की जानकारी भी इस ज्ञान से मिली।

कहा कहूं बल कुंजीय का, रूहें बड़ी रूह निसबत।
और हक बड़ी रूह रूहन की, इन इलमें देखी खिलवत।। ३४ ।।

जागृत बुद्धि की तारतम वाणी से रूहें, श्री श्यामाजी के अंग है और श्री श्यामा महारानी और रूहें श्री राजजी महाराज के अंग हैं, की पहचान हुई और खिलवतखाना (मूल-मिलावे) का ज्ञान हुआ।

Nijanand App

ए बल देखो कुंजीय का, नीके देख्या हक इस्क।
जुदे बैठाए लिखी इसारतें, जासों समझे रूह बेसक।। ३५ ।।

जागृत बुद्धि के ज्ञान से श्री राजजी महाराज के इश्क की अच्छी तरह से पहचान हो गई। रूहों को समझाने के वास्ते ही इकट्ठा बिठाकर जुदा किया है, ताकि रूहों को इश्क की हकीकत का पता लग जाए।

ए बल देखो इन कुंजीय का, बातें छिपी हक दिल की।
सो सब समझी जात हैं, हैं अर्स की गुझ जेती।। ३६ ।।

जागृत बुद्धि की तारतम वाणी से श्री राजजी महाराज के दिल की और परमधाम के सब छिपे रहस्य समझ में आ जाते हैं।

देखो बल इन कुंजीय का, ए जो लिखी रमूजें हक।
आखिर रसूल होए आवहीं, दे इलम खोलावें बेसक।। ३७ ।।

जागृत बुद्धि के ज्ञान तारतम वाणी से कुरान में जो श्री राजजी महाराज ने इशारतें लिख रखी थीं कि आखिरत के समय खुद खुदा रसूल बनकर आएंगे और सबको अपनी जागृत बुद्धि का ज्ञान देकर सब छिपे रहस्य जाहिर करेंगे।

ए बल देखो कुंजीय का, रूहें बैठाई जुदी कर।
आप केहे संदेसे कहावहीं, आप ल्यावें जुदे नाम धर।। ३८ ।।

जागृत बुद्धि के तारतम ज्ञान की शक्ति को देखो तो रूहों को श्री राजी महाराज ने अपने चरणों में बिठाकर अलग कर रखा है और खुद अपने संदेशे अपने जुदा-जुदा नाम रखकर (कभी श्री कृष्णजी, मुहम्मद साहब, श्री देवचन्द्रजी, कभी महामति) दे रहे हैं।

बल क्यों कहूं इन कुंजीय का, जो हक दिल गुझ इस्क।
तिन दरियाव की नेहेरें, उतरी नासूत में बेसक।। ३९ ।।

जागृत बुद्धि की तारतम वाणी का बल कैसे कहूं? जिससे श्री राजजी महाराज के दिल की छिपी बातें व इश्क के सागर की लहरें नासूत में आ गईं।

बल कहा कहूं कुंजीय का, ए जो झूठा खेल रंचक।
सो रूहों सांच कर देखाइया, बन्ध बांधे कई बुजरक।। ४० ।।

जागृत बुद्धि के ज्ञान तारतम वाणी की शक्ति का कैसे बयान करूं? जिसने इस झूठे खेल को सत्य करके अपनी रूहों को दिखाया। इसको दिखाने के वास्ते कई बन्ध बांधे, अर्थात् अखण्ड परमधाम रूहें, इलम, इश्क, असराफील, श्री राजजी महाराज नाचीज ब्रह्माण्ड में आ गए और ब्रह्माण्ड फिर भी खड़ा है।

ए बल देखो कुंजीय का, रूहें बीच चौदे तबक के आए।
सो इलमें देखाया झूठ कर, बीच अर्स के बैठाए।। ४१ ।।

तारतम ज्ञान की शक्ति को देखो कि रूहें चौदह तबक में आईं और उन्होंने परमधाम में बैठकर झूठे खेल को देखा।

इन हकका इस्क दुनी मिने, न पाइए लदुन्नी बिन।
बिना इस्क न इलम आवहीं, दोऊ तौले अरस परस बजन।। ४२ ।।

श्री राजजी महाराज का इश्क जागृत बुद्धि के ज्ञान के बिना दुनियां में कहीं नहीं मिलेगा। बिना इश्क के इलम नहीं आता और बिना इलम के इश्क नहीं आता। यह दोनों एक समान हैं।

Nijanand App

ए कुंजी बल अपार है, जिनसों पाया अपार।
लिया हक दिल गुझ इस्क, जिनको काहूं न सुमार।।४३ ।।

तारतम वाणी की शक्ति को देखो, जिससे श्री राजजी महाराज के दिल की गुझ बेशुमार इश्क की पहचान हुई जिसको अभी तक नहीं जानते थे।

ए इलम कुंजी अर्स की, रूह अल्ला ल्याए हकपें।
माहें कई गुझ हक दिल की, सो सब देखी इन कुंजी सें।।४४ ।।

यह जागृत बुद्धि का तारतम ज्ञान परमधाम की कुंजी है, जिसे श्यामा महारानी श्री राजजी महाराज से लेकर आई हैं। अब इस जागृत बुद्धि से श्री राजजी महाराज के दिल की सब छिपी बातें जाहिर हो गईं।

आसमान जिमी के बीच में, बातें बिना हिसाब।
तिनमें बातें जो हक की, सो लिखी मिने किताब।।४५ ।।

इस संसार में बिना हिसाब अटकल के ग्रन्थ हैं, पर कुरान के बिना और किसी में खुदा और परमधाम की बातें नहीं हैं।

या जाहेर या बातून, रमूजें या इसारत।
सो खोल्या सब इन कुंजिएं, हकीकत या मारफत।।४६ ।।

कुरान में जाहिरी या बातूनी जो भी बातें इशारों से लिखी थीं, वह सब तारतम ज्ञान के आने से खुल गईं और हकीकत व मारफत की पहचान हो गई।

अव्वल से आखिर लग, किया कुंजिएं सबका काम।
हैयाती चौदे तबकों, दई कायम भिस्त तमाम।।४७ ।।

शुरू से अन्त तक सभी को अखण्ड मुक्ति देने का काम तारतम वाणी जागृत बुद्धि के ज्ञान ने कर दिया।

कहूं दुनियां चौदे तबक में, कह्या न हक का एक हरफ।
तो हक सूरत क्यों केहेवहीं, किन पाई न बका तरफ।।४८ ।।

चौदह तबक की दुनियां में किसी को पता नहीं था कि पारब्रह्म कहां है और न किसी ने उसके बारे में बताया। जिन्हें अखण्ड परमधाम कहां है की सुध नहीं है, तो पारब्रह्म की सुरता का ज्ञान कौन देता?

तिन हक के दिल का गुझ जो, सो कुंजिएं खोल्या इन।
तो बात दुनी की इत कहां रही, कुंजी ऐसी नूर रोसन।।४९ ।।

श्री राजजी महाराज के दिल की गुझ बातों का भेद तारतम ज्ञान ने बता दिया। अब दुनियां का अटकली ज्ञान इसके सामने नहीं चलेगा।

सदर-तुल-मुंतहा अर्स अजीम, जबरूत या लाहूत।
इत जरा सक कहूं ना रही, ए बल कुंजी कूवत।।५० ।।

अक्षरधाम, परमधाम में किसी तरह का संशय तारतम ज्ञान की शक्ति से नहीं रहा।

Nijanand App

अर्स अजीम के बाग जो, हौज जोए जानवर।
इत सक जरा न काहू में, मोहोलात या अन्दर।।५१ ।।

परमधाम के बगीचे, हौज कौसर तालाब, जमुनाजी या जानदर या अन्दर की मोहोलातों में अब जरा भी शक नहीं रह गया।

इन अर्सों की भी क्या कहूं, इन कुंजी अतन्त बूझ।
और बात इत कहां रही, काढ़्या हक के दिल का गुझ।।५२ ।।

तारतम ज्ञान ने जब श्री राजजी महाराज के दिल की गुझ बातें जाहिर कर दीं तो अब यहां बाकी क्या रह गया? इन अर्शों की भी क्या कहूं?

महामत कहे ए मोमिनों, ए ऐसी कुंजी इलम।
ए मेहेर देखो मेहेबूब की, तुमको पढ़ाए आप खसम।।५३ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे मोमिनो! यह जागृत बुद्धि का ज्ञान तारतम वाणी ऐसी कुंजी है जिसके द्वारा श्री राजजी महाराज स्वयं अपने मोमिनों को परमधाम की पहचान करा रहे हैं।

।। प्रकरण ।। १३ ।। चौपाई ।। १०४२ ।।

सागर सातमा निसबत का

अब कहूं दरिया सातमा, जो निसबत भरपूर।
याको वार ना पार काहूं, जो नूर के नूर को नूर।।१ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि रंग महल के ईशान कोने में यह सातवां सागर निसबत का है। यह श्री श्यामाजी महारानी की शोभा और निसबत का सागर है। इसका पारावार नहीं है। यह श्री राजजी महाराज के अंग श्री श्यामाजी और श्यामा महारानी के अंग रूहों का सागर है।

बेसुमार ल्याए सुमार में, ए जो करत हों मजकूर।
क्यों आवे बीच हिसाब के, जो हक अंग सदा हजूर।।२ ।।

यह श्री श्यामाजी महारानी श्री राजजी महाराज की अर्द्धांगिनी हैं और सदा एक रूप हैं और साथ रहती हैं। इनकी बेशुमार शोभा को शुमार में लाकर वर्णन करती हूं।

खूबी क्यों कहूं निसबत की, वास्ते निसबत खुली हकीकत।
तो पाई हक मारफत, जो थी हक निसबत।।३ ।।

अब श्री श्यामाजी के सम्बन्ध की खूबी का कैसे बयान करूं? इनके वास्ते ही हकीकत के भेद जागृत बुद्धि के ज्ञान से खुले, जिससे श्री राजजी महाराज के मारफत के ज्ञान की पहचान हुई।

निसबत असल सबन की, जित निसबत तित सब।
सब निसबत के वास्ते, इलमें जाहेर किए अब।।४ ।।

रूहों का सम्बन्ध श्री श्यामा महारानीजी से है और श्री श्यामाजी का सम्बन्ध श्री राजजी से है। अब जहां श्री श्यामाजी हैं वहां सब कुछ आ गया। जागृत बुद्धि के ज्ञान (तारतम ज्ञान) ने यह सारी हकीकत इनके वास्ते ही जाहिर की है।

Nijanand App